❍ 16 / 10 / 22 की मुरली से चार्ट ❍
⇛ TOTAL MARKS:- 100 ⇚

∬ 1 ∬ होमवर्क (Marks: 5*4=20)

➢➢ *सेवा में बिजी रह मायाजीत स्थिति का अनुभव किया ?*

➢➢ *"मैं रूहानी रॉयल आत्मा हूँ" - यह नशा रहा ?*

➢➢ *ब्रह्मा बाप को फॉलो किया ?*

➢➢ *आत्माओं को संतुष्टता का अनुभव करवाया ?*

────────────────────────

✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° °

☆ *अव्यक्त पालना का रिटर्न* ☆

❂ *तपस्वी जीवन* ❂

✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° °

〰✧ जैसे देखना, सुनना, सुनाना-ये विशेष कर्म सहज अभ्यास में आ गया है, ऐसे ही कर्मातीत बनने की स्टेज अर्थात् कर्म को समेटने की शक्ति से अकर्मी अर्थात् कर्मातीत बन जाओ। *एक है कर्म-अधीन स्टेज, दूसरी है कर्मातीत अर्थात् कर्म-अधिकारी स्टेज। तो चेक करो मुझ कर्मेन्द्रिय-जीत स्वराज्यधारी राजाओं की राज्य कारोबार ठीक चल रही है?*

✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° °

∬ 2 ∬ तपस्वी जीवन (Marks:- 10)

➢➢ *इन शिक्षाओं को अमल में लाकर बापदादा की अव्यक्त पालना का रिटर्न दिया ?*

✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚

———————————————

✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚

☆ *अव्यक्त बापदादा द्वारा दिए गए* ☆

❂ *श्रेष्ठ स्वमान* ❂

✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚

✺ *"मैं फरिश्ता हूँ"*

〰✧ अपने को डबल लाइट फरिश्ता अनुभव करते हो? *डबल लाइट स्थिति फरिश्तेपन की स्थिति है। फरिश्ता अर्थात् लाइट। जब बाप के बन गये तो सारा बोझ बाप को दे दिया ना? जब बोझ हल्का हो गया तो फरिश्ते हो गये। बाप आये ही हैं बोझ समाप्त करने के लिए।* तो जब बाप बोझ समाप्त करने वाले हैं तो आप सबने बोझ समाप्त किया है ना? कोई छोटी-सी गठरी छिपाकर तो नहीं रखी है? सब कुछ दे दिया या थोड़ा-थोड़ा समय के लिए रखा है? थोड़े-थोड़े पुराने संस्कार हैं या वह भी खत्म हो गये? पुराना स्वभाव या पुराना संस्कार, यह भी तो खजाना है ना। यह भी दे दिया है?

〰✧ अगर थोड़ा भी रहा हुआ होगा तो ऊपर से नीचे ले आयेगा, फरिश्ता बन उड़ती कला का अनुभव करने नहीं देगा। कभी ऊंचे तो कभी नीचे आ जायेंगे। इसलिए बापदादा कहते हैं सब दे दो। यह रावण की प्रापर्टी है ना। रावण की प्रापर्टी अपने पास रखेंगे तो दु:ख ही पायेंगे। *फरिश्ता अर्थात् जरा भी रावण की प्रापर्टी न हो, पुराना स्वभाव या संस्कार आता हैं ना? कहते हो ना - चाहते तो नहीं थे लेकिन हो गया, कर लिया या हो जाता है। तो इससे सिद्ध है कि छोटी-सी पुरानी गठरी अपने पास रख ली है। किचड़-पट्टी की गठरी है।*

〰✧ *तो सदा के लिए फरिश्ता बनना - यही ब्राह्मण जीवन है। पास्ट खत्म हो गया। पराने खाते भस्म कर दिये। अभी नई बातें, नये खाते हैं। अगर थोड़ा

भी पुराना कर्जा रहा होगा तो सदा ही माया का मर्ज लगता रहेगा क्योंकि कर्ज को मर्ज कहा जाता है। इसलिए सारा ही खाता समाप्त करो। नया जीवन मिल गया तो पुराना सब समाप्त।*

✧°° ••☆••✧°° ••☆••✧°° ••☆••✧°°

∬ 3 ∬ स्वमान का अभ्यास (Marks:- 10)

➢➢ *इस स्वमान का विशेष रूप से अभ्यास किया ?*

✧°° ••☆••✧°° ••☆••✧°° ••☆••✧°°

———————————————

✧°° ••☆••✧°° ••☆••✧°° ••☆••✧°°

❂ *रूहानी ड्रिल प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा की प्रेरणाएं* ☆

✧°° ••☆••✧°° ••☆••✧°° ••☆••✧°°

〰✧ महारथियों की स्थिति औरों से न्यारी और प्यारी स्पष्ट हो रही है ना। जैसे ब्रह्माबाप स्पष्ट थे, ऐसे नम्बरवार आप निमित आत्माएँ भी साकार स्वरूप से स्पष्ट होती जाती। *कर्मातीत अर्थात न्यारा और प्यारा।*

〰✧ कर्म दूसरे भी करते हैं और आप भी करते हो लेकिन आपके कर्म करने में अन्तर है। स्थिति में अन्तर है। जो कुछ बीता और न्यारा बन गया। *कर्म किया और वह करने के बाद ऐसा अनुभव होगा जैसे कि कुछ किया नहीं।*

〰✧ कराने वाले ने करा लिया। ऐसी स्थिति का अनुभव करते रहेंगे। हल्का-पन रहेगा। *कर्म करते भी तन का भी हल्का-पन, मन की स्थिति में भी हल्का-पन।* कर्म की रिजल्ट मन को खैंच लेती है। ऐसी स्थिति है?

✧°° ••☆••✧°° ••☆••✧°° ••☆••✧°°

∬ 4 ∬ रूहानी ड्रिल (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर रूहानी ड्रिल का अभ्यास किया ?*

✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° °

✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° °

❂ *अशरीरी स्थिति प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा के इशारे* ☆

✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° °

〰✧ बापदादा जब सुनते हैं आज बहुत बिजी, बहुत बिजी, शक्ल भी बिजी कर देते हैं, बापदादा मानते नहीं हैं। *जो चाहे वह कर सकते हो। अटेन्शन कम है। जैसे वह अटेन्शन रखते होना - १० मिनट में यह लेटर पूरा करना है, इसीलिए बिजी होते हो ना, टाइम के कारण। ऐसे ही सोचो १० मिनट में यह काम करना है, वह भी तो टाइमटेबल बनाते हो ना। इसमें एक-दो मिनट पहले से ही एड कर दो। ८ मिनट लगना है, ६ मिनट नहीं, ८ मिनट लगना है तो २ मिनट साधना में लगाओ। यह हो सकता है?* कितना भी बिजी हों, लेकिन पहले से ही साधन के साथ साधना का समय एड करो। लेकिन स्व-उन्नति या साधना बीच-बीच में न करने से थकावट का प्रभाव पड़ता है। बुद्धि भी थकती है, हाथ-पाँव भी थकता है और बीच-बीच में अगर साधना का समय निकालो तो जो थकावट है ना वह दूर हो जाये, खुशी होती है ना। खुशी में कभी थकावट नहीं होती है।

✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° °

∬ 5 ∬ अशरीरी स्थिति (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर अशरीरी अवस्था का अनुभव किया ?*

✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° °

———————————————————

∬ 6 ∬ बाबा से रूहरिहान (Marks:-10)
(आज की मुरली के सार पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- रूहानी रायल्टी सम्पन्न आत्मा बनना"*

➳ _ ➳ जीवन में जब भाग्य ने भगवान को प्रकट नही किया था... यह जीवन कितना बोझिल और अंधकार से भरा लक्ष्य हीन था.... अपने दुःख भरे अतीत की तुलना में, सुंदर सजीले वर्तमान को देख.... मै आत्मा *मेरे जीवन को यूँ सुंदरता के रंगो से सजाने वाले... जादूगर बाबा की यादो में खो जाती हूँ..*. प्यारे बाबा ने पवित्रता के रंग में रंगकर, मुझ आत्मा को शिखर पर सजा दिया है... *शिव पिता और ब्रह्मा मां के आँगन में खिलने वाला खुबसूरत गुलाब मै आत्मा.*.. ज्ञान और योग के पानी से निरन्तर गुणो... और शक्तियो की पंखुड़ियों से खिली मै आत्मा... पूरे विश्व को अपनी रूहानियत की खशबू सराबोर कर रही हूँ...

❉ *मीठे बाबा ने मुझ आत्मा को मेरे महान भाग्य के नशे में डुबोते हुए कहा :-* "मीठे प्यारे फूल बच्चे.... *परमधाम से भगवान ने आकर, आप महान बच्चों को अपनी आँखों का तारा बनाया है.*.. दुखो के कंटीले जंगल से बाहर निकाल, सुख भरी गोद में बिठाया है... निराकार और साकारी पिता की अनूठी पालना में पलने वाले सोभाग्यशाली हो... सदा इसी रायल्टी में रहो... क्योकि ऐसा प्यारा भाग्य तो देवताओ का भी नही है..."

➳ _ ➳ *मै आत्मा ईश्वरीय पालना में सजे संवरे अपने महान भाग्य को देख पुलकित होते हुए कहती हूँ :-* "मीठे मीठे प्यारे बाबा... *मुझ आत्मा ने स्वयं भगवान को पा लिया है इससे प्यारी बात भला और क्या होगी.*.. आपने मेरे कौड़ी जेसे जीवन को, हीरे जैसा बेशकीमती बना दिया है... मै आत्मा असीम सुखो की अनुभूतियों से भर गयी हूँ... अलौकिक और पारलौकिक पिता को पाने वाली... देवताओ से भी ज्यादा भाग्यशाली हूँ..."

❉ *प्यारे बाबा ने मुझ आत्मा को सत्य ज्ञान से भरपूर करते हुए, और अपने सच्चे प्रेम की तरंगो से भरते हुए कहा :-* "मीठे प्यारे लाडले बच्चे... ईश्वरीय प्यार को पाकर, जो विकारो के काँटों से, दिव्य गुणो के फूल में परिवर्तित हुए हो... इन मीठी स्मर्तियो में सदा झूमते रहो... *अपनी रूहानियत भरी चाल से निराकार और साकार पिता की झलक... सारे विश्व को दिखाकर, सबको ईश्वरीय प्यार का दीवाना बनाओ*...

➳ _ ➳ *मै आत्मा प्यारे बाबा की अमूल्य ज्ञान निधि से मन बुद्धि को शक्तिशाली बनते देख कहती हूँ :-* "मीठे दुलारे बाबा मेरे... आपके बिना तो मै आत्मा इस विकारी दुनिया में अनाथो जैसा भटक रही थी... खुशियो के लिए सदा तरसती ही रही... आपने प्यारे बाबा मुझे पिता का प्यार देकर फिर से सनाथ बना दिया है... *ब्रह्मा अलौकिक पिता संग निराकारी पालना ने मुझे हीरों सा सजा दिया है*...

❉ *मीठे बाबा ने मुझ आत्मा को अपने स्नेहिल आगोश में लेते हुए कहा :-* "मीठे प्यारे सिकीलधे बच्चे... आप देवताओ से भी ज्यादा खुशनसीब हो जो... भगवान के साये में सम्मुख बेठ, तीनो लोको और कालो को जान गए हो... *निराकार और साकार दोनों का प्यार पाने वाले, देवताओ से भी ऊँचे भाग्य के धनी हो.*.. सदा इस मीठी खुमारी में खोये रहो...

➳ _ ➳ *मै आत्मा मीठे बाबा के स्नेह में डूबी, अपने भाग्य पर मुस्कराते हुए कहती हूँ :-* "मीठे दुलारे मेरे बाबा... आपने आकर जीवन को मीठी बहारो सा सजाया है... मुझे देवताओ से भी ऊँच बनाकर, अपने गले लगाया है... वरदानों भरा हाथ मेरे सिर पर रखकर... मुझे सबसे खुशनसीब बनाया है... *ब्रह्मा मा के आँचल में और शिव पिता की छत्रछाया में पलने वाली मै आत्मा महानता से सज गयी हूँ..*. प्यारे बाबा से मीठी रुहरिहानं करके मै आत्मा... अपने कर्मक्षेत्र पर लौट आती हूँ...

———————————————

|| 7 || योग अभ्यास (Marks:-10)

(आज की मुरली की मुख्य धारणा पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- सेवा में बिजी रह मायाजीत स्थिति का अनुभव*"

➳ _ ➳ सारे विश्व पर जीत पहनने वाली माया के ऊपर जीत पहन मायाजीत जगतजीत बनने के लिए अपने समर्थ उस्ताद की सुमत पर सदा चलने की स्वयं से मैं प्रतिज्ञा करती हूँ और मन ही मन विचार करती हूँ कि माया ने कैसे सभी को भ्रम में डाल कर उलझा रखा है! *आज सारी दुनिया माया के धोखे में आकर कैसे उसकी मुरीद बन गई है! माया ने सबकी आंखों पर ऐसी पट्टी बांध दी है कि मनुष्य सही और गलत की पहचान करना ही भूल गए हैं*। किन्तु कितनी महान भाग्यवान हूँ मै आत्मा जो स्वयं भगवान समर्थ उस्ताद के रूप में मुझे मिले है और अपनी श्रेष्ठ मत द्वारा मुझे माया के चंगुल से छूटने का सहज उपाय बता रहें हैं।

➳ _ ➳ अपने समर्थ उस्ताद से उनकी सुमत पर चल मायाजीत बनने का मैं प्रोमिस करती हूँ और अंतर्मुखी होकर, बड़ी सूक्ष्म रीति अपनी चेकिंग करती हूँ कि माया कौन - कौन से रॉयल रूप धारण करके मेरे पुरुषार्थ में बाधा डालने का प्रयास करती है। *अपनी महीन चेकिंग करते हुए मैं अनुभव करती हूँ कि माया के हर वार से स्वयं को बचाने का शक्तिशाली शस्त्र एक ही है और वो है मेरे उस्ताद की सुमत जो अमृतवेले से लेकर रात्रि सोने तक मेरे उस्ताद ने मुझे दी है*। और इसलिए अब कदम - कदम अपने उस्ताद की सुमत पर चलते हुए मुझे माया पर जीत पाने का पुरुषार्थ कर जगतजीत बनना है।

➳ _ ➳ इसी दृढ़ संकल्प के साथ माया को पहचानने और उसे परखने की शक्ति स्वयं में धारण करने के लिए अपने सर्वशक्तिवान उस्ताद की याद में मैं अपने मन और बुद्धि को स्थिर करती हूँ और *अपने निराकार ज्योति बिंदु स्वरूप को धारण कर चल पड़ती हूँ उनके पास। देह और देह की दुनिया के हर बन्धन से मुक्त होकर मैं आत्मा ऊपर की और उड़ रही हूँ*। इस निर्बन्धन स्थिति में स्वयं को एक दम हल्का अनुभव करते हुए मैं आत्मा गहन आनन्द की अनुभूति कर रही हूँ।

➳ _ ➳ ज्ञान और योग के अपने खूबसूरत पँखो को फैला कर एक आजाद पंछी की भांति उड़ने का भरपूर आनन्द लेते - लेते मैं आकाश को पार कर, फरिश्तो की दुनिया से होती हुई लाल प्रकाश की एक अति सुंदर दुनिया मे प्रवेश करती हूँ। *चमकते हुए चैतन्य सितारों की निराकारी दुनिया अपने पिता परमात्मा के परमधाम घर मे अब मैं स्वयं को अपने निराकार शिव पिता के सामने देख रही हूँ। उनकी सर्वशक्तियों की किरणों की छत्रछाया के नीचे बैठ शांति, सुख, प्रेम, आनन्द की अनुभूति करते हुए गहन अतीन्द्रिय सुख में मैं डूबती जा रही हूँ*। मेरे सर्वशक्तिवान शिव पिता के स्नेह की शीतल छाया और उनकी सर्वशक्तियाँ मुझे मायाजीत बनाने के लिए मेरी सोई हुई शक्तियों को जागृत कर मुझे शक्तिशाली बना रही हैं।

➳ _ ➳ 63 जन्मों तक माया के जाल में फँस कर, अपनी शक्तियों को भूलने के कारण, दुखी होने की जो पीड़ा मैं सहन कर रही थी, वो पीड़ा अपने प्यारे पिता का स्नेह पाकर समाप्त हो गई है और मैं फिर से स्वयं को शक्तियों से सम्पन्न अनुभव करने लगी हूँ। *सर्वशक्तिसम्पन्न बनकर अब मैं माया पर जीत पाने के लिए फिर से साकार सृष्टि रूपी माया की नगरी में लौट रही हूँ। अपने साकार तन का आधार लेकर मैं फिर से इस माया नगरी में अपना पार्ट बजा रही हूँ लेकिन सर्वशक्तिवान समर्थ उस्ताद को सदा अपने साथ कम्बाइंड रखकर अब मैं कदम - कदम उनकी सुमत पर चल माया के हर वार को पहचान कर, निडर होकर उसका सामना कर रही हूँ*। मेरे समर्थ उस्ताद की सर्वशक्तियों की छत्रछाया सेफ्टी का किला बन कर मुझे माया के जाल में फंसने से बचाकर मायाजीत जगतजीत बना रही है।

∫∫ 8 ∫∫ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के वरदान पर आधारित...)

✺ *मैं सेवा का प्रत्यक्ष फल खाते एवरहेल्दी, वेल्दी आत्मा हूँ।*
✺ *मैं हैप्पी रहने वाली सदा खुशहाल आत्मा हूँ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

———————————————

∫∫ 9 ∫∫ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के स्लोगन पर आधारित...)

✺ *मैं पवित्र आत्मा हूँ ।*
✺ *मैं आत्मा स्वच्छता का दर्पण हूँ ।*
✺ *मैं आत्मा सत्यता का दर्पण हूँ ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

———————————————

∫∫ 10 ∫∫ अव्यक्त मिलन (Marks:-10)
(अव्यक्त मुरलियों पर आधारित...)

✺ अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ *ब्रह्मा बाप यही कहते कि बच्चे सोचते बहुत हैं,* क्या होगा, यह होगा, वह होगा... यह होगा वा नहीं होगा...! यह होगा! - इस सोच में ज्यादा रहते हैं। यह तो नहीं होगा! कभी सोचते होगा, कभी सोचते नहीं होगा। यह होगा, होगा का गीत गाते रहते हैं। लेकिन अपने फरिश्ते पन के, सम्पन्न सम्पूर्ण स्थिति में तीव्रगति से आगे बढ़ने का श्रेष्ठ संकल्प कम करते हैं। *होगा, क्या होगा!... यह गा-गा के गीत ज्यादा गाते हैं।*

➳ _ ➳ बाप कहते हैं कुछ भी होगा लेकिन आपका लक्ष्य क्या है? *जो होगा वह देखने और सुनने का लक्ष्य है वा ब्रह्मा बाप समान फरिश्ता बनने का है?* उसकी तैयारी कर ली है? प्रकृति अपना कुछ भी रंग-रूप दिखाये, आप

फरिश्ता बन, बाप समान अव्यक्त रूपधारी बन प्रकृति के हर दृश्य को देखने के लिए तैयार हो? प्रकृति की हलचल के प्रभाव से मुक्त फरिश्ते बने हो? अपनी स्थिति की तैयारी में लगे हुए हो वा क्या होगा, क्या होगा - इसी सोचने में लगे हो? क्या कोई भी परिस्थिति सामने आये तो आप प्रकृतिपति अपने प्रकृतिपति की सीट पर सेट होंगे वा अपसेट होंगे? यह क्या हो गया? यह हो गया, यह हो गया... इसी नजारों के समाचारों में बिजी होंगे वा *सम्पन्नता की स्थिति में स्थित हो किसी भी प्रकृति की हलचल को चलते हुए बादलों के समान अनुभव करेंगे?*

✺ *ड्रिल :- "सम्पन्नता की स्थिति में स्थित हो किसी भी प्रकृति की हलचल को चलते हुए बादलों के समान अनुभव करना"*

➳ _ ➳ *मैं आत्मा भृकुटी सिंहासन पर विराजमान होकर परमात्मा को आकाश सिंहासन छोड़कर नीचे आने का आग्रह करती हूँ...* आकाश से एक चमकता हुआ ज्योतिपुंज नीचे उतर रहा है... सूक्ष्मलोक में ब्रह्मा के तन का आधार लेकर परमप्रिय परमपिता परमात्मा मेरे सामने बाहे फैलाये आकर खड़े हो जाते हैं... बापदादा मेरा हाथ पकड एक मैदान में लेकर जाते हैं...

➳ _ ➳ बाबा मुझ आत्मा को मनमनाभव का मन्त्र देकर अपने सामने बिठाते हैं... *बाबा की दृष्टि से, मस्तक से ज्ञान-योग की ज्वाला प्रज्वलित हो रही है...* मैं आत्मा बाबा से निकलती ज्ञान-योग की शक्तिशाली किरणों को ग्रहण कर रही हूँ... *इन किरणों को ग्रहण कर मैं आत्मा दिव्य दृष्टि द्वारा इस देह से न्यारी हो एक ओर अपने आदि स्वरुप(देव स्वरुप) को देख रही हूँ, तो दूसरी ओर माया के जाल में फँसे हुए कमजोर स्वरुप को देख रही हूँ...*

➳ _ ➳ क्या होगा, कैसे होगा, कब होगा, होगा या नही होगा... इन व्यर्थ के संकल्पों में उलझकर मैं आत्मा माया के जाल में फंसी हुई थी, संशय बुद्धि बन गयी थी... *माया ने मुझ आत्मा के उमंग उत्साह के पंख काट दिए थे... मैं आत्मा अपना समय व्यर्थ गंवाती जा रही थी... बाबा से निकलती हुई शक्तिशाली किरणों में मुझ आत्मा के सभी व्यर्थ संकल्प भस्म हो गये है... अब मैं आत्मा व्यर्थ से समर्थ बन गयी हूँ... मुझ आत्मा के अनेक जन्मों के विकर्म

स्वाहा हो रहे हैं... काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार जैसे विकार बीज सहित दग्ध हो रहे हैं... मैं आत्मा विकारो का त्यागकर कमजोर से महावीर बन जाती हूँ...*

➳ _ ➳ महावीर स्थिति में स्थित हो मैं आत्मा सभी बंधनों से न्यारी... *बादलो को चीरती हुई उड़ती जा रही हूँ... सामने से आते हुए विघ्न रुपी बादलो को मैं आत्मा जम्प लगा क्रॉस करती हुई बाप समान फरिश्ता स्वरुप स्थिति का अनुभव करती हुई पुरुषार्थ में आगे बढ़ती जा रही हूँ...* प्यारे बापदादा मुझ फरिश्ते को अपने साथ सूक्ष्मवतन में ले जाते हैं...

➳ _ ➳ *सूक्ष्मवतन से बापदादा वा एडवांस पार्टी की आत्माओ से भर भरके वरदान, ब्लेस्सिंग्स लेकर मैं फरिश्ता नीचे साकार लोक में आती हूँ...* अब मैं आत्मा ड्रामा के चक्र को बुद्धि में धारण कर, पांचो स्वरूपो का अभ्यास करती हुई साक्षी हो ड्रामा के हर सीन को..., सम्बन्ध-संपर्क में आयी हर आत्मा के स्वभाव संस्कारो को तथा तमोप्रधान प्रकृति के रूप रंग को अपनी सम्पन्नता की स्थिति में सेट हो देखती हुई, शांति का दान देती हूँ... प्रकृति की कोई भी हलचल मुझ आत्मा को अब अपने फरिश्तेपन की स्टेज से अपसेट नही कर सकती... *अपनी सम्पन्नता की स्टेज में स्थित हो मैं प्रकृतिपति आत्मा बापदादा से प्राप्त दिव्य शक्तियों को चारों ओर फैलाकर तमोप्रधान प्रकृति को शुद्ध, सतोप्रधान बना रही हूँ...*

⊙_⊙ आप सभी बाबा के प्यारे प्यारे बच्चों से अनुरोध है की रात्रि में सोने से पहले बाबा को आज की मुरली से मिले चार्ट के हर पॉइंट के मार्क्स ज़रूर दें ।

♔ ॐ शांति ♔